आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2713 • उदयपुर, सोमवार 30 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

हीरा नगर (जम्मू एवं काश्मीर) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 10 अप्रेल 2022 को जय बाबा नीलकंठ सेवा मण्डल हीरानगर, जम्मू में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान अशोक जी ताड़िया रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 85, कृत्रिम अंग माप 15, कैलिपर माप 19 की सेवा हुई तथा 05 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अभिनन्दन जी शर्मा (डी.डी.सी. हीरानगर, जम्मू), अध्यक्षता श्रीमान् हरजेन्द्र सिंह जी (नगर निगम अध्यक्ष, हीरानगर जम्मू), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् राकेश जी शर्मा, श्रीमान् रुपलाल जी, श्रीमान् रामदयाल जी शर्मा, भारती जी शर्मा (समाजसेवी) रहे।

डॉ. तपश जी बेहरा (पी.एन.डो.), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीश जी हिन्डोनिया, श्री गोपाल जी गोस्वामी (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (कैमरामेन एवं विडियोग्राफर) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

अहमदाबाद (गुजरात) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 मार्च 2022 को अन्ध कल्याण केन्द्र, पिंक सिटी के पास रानीप, अहमदाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता अन्ध कल्याण केन्द्र, करुणा ट्रस्ट एवं भारतीय जनता पार्टी साबरमती रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 430, कृत्रिम अंग माप 68, कैलिपर माप 36 की सेवा हुई तथा 29 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रदीप जी परमार (सामाजिक कल्याण अधिकारिता मंत्री, गुजरात सरकार), अध्यक्षता श्री अरविन्द भाई पटेल (विधायक साबरमती, अहमदाबाद), विशिष्ट अतिथि श्री अमृत भाई पटेल (मंत्री–करुणा ट्रस्ट), कुसुम बेन आर.शाह (प्रमुख–अन्ध कल्याण), श्रीमान् शंकर भाई एल.पटेल, श्री वल्लभ भाई धनानी (समाज सेवी) रहे। डॉ. नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहा जी अग्निहौत्री (पी.एन. डो.), श्री नाथूसिंह जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (उप प्रभारी) श्री बहादुर सिंह जी मीणा (सहायक), श्री कैलाश जी चौधरी (आश्रम प्रभारी अहमदाबाद), श्री सूरज जी सेन (आश्रम साधक अहमदाबाद) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 5 जून, 2022

- औरंगाबाद, बिहार
- कृषि उपज मण्डी, ओरछा रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी, म.प्र.
- जेबीएफ मेडिकल सेंटर, भारतीय ग्राम सदल्लापुर, राम धर्म कांठा के पास, गजरौला, उमरोह, उ.प्र.
- हनुमान व्यायामशाला, पटेल मैदान के पास, अजमेर, राज.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में करायें निर्माण

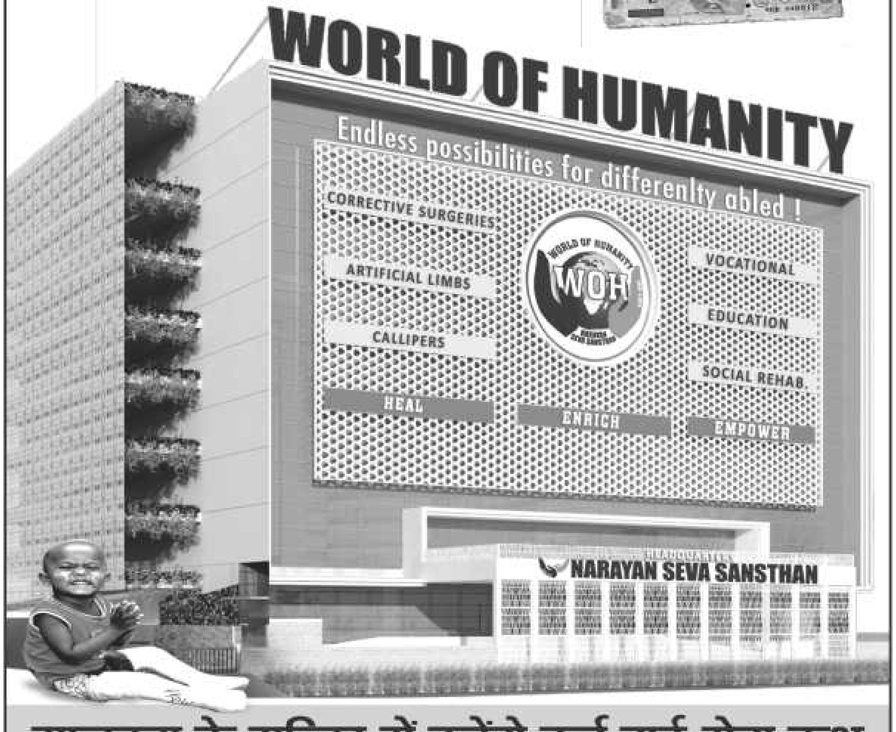

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

महीनों से न नहाए न नाखून काटे

गिर्वा तहसील के आदिवासी बहुल अलसीगढ़ पंचायत के कांकरफला गांव में 7 फरवरी को नारायण सेवा संस्थान ने अपनी सामाजिक गतिविधियों के तहत अन्नदान, वस्त्रदान, शिक्षा एवं चिकित्सा सहायता शिविर आयोजित कर 40 बच्चों को जरूरत के मुताबिक गणवेश, जूते, साबुन, तेल, टूथपेस्ट–ब्रश और परिवार को राशन सामग्री की मदद देकर स्कूली शिक्षा से जोड़ा। संस्थान ने ग्रामीणों और बच्चों को साफ–सफाई व स्वच्छता की सीख देते हुए डॉ. हर्ष पण्ड्या के माध्यम से 150 बीमारों का स्वास्थ्य परीक्षण कर

एलर्जी, एनीमिया, खांसी व मौसमी बीमारियों की दवाईयां दी। इस दौरान प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी जीवनलाल जी मेघवाल, सरपंच पुश्कर जी मीणा, प्रधानाध्यापक निर्मल जी कोठारी एवं संस्थान के भगवान प्रसाद जी गौड़, दल्लाराम जी पटेल, जसबीर सिंह जी व दिलीप सिंह जी सहित 30 सदस्यीय टीम ने सेवाएं दी।

सहायता सामग्री वितरण– संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी भैया के नेतृत्व में 540 आदिवासी स्त्री–पुरूषों को 15 क्विंटल मक्का, 300 लुगड़ीयां, 200 जोड़ी चप्पल, 150 धोतियां वितरित की गई। वहीं शिविर में आये करीब 350 बच्चों को मंजन करवाते हुए साबुन टूथपेस्ट–ब्रश भेंट किए। नाखून–बाल कटिंग कर नहलाया, नये कपड़ें और जूते पहनाए तथा 2 अति निर्धन एवं नेत्रहीन परिवारों को मासिक राशन व सहायक उपकरण भी दिये।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

माताओं की, बहिनों की चेतना जगी। कर्तव्य बोध है। बन्धुओं की चेतना अवचेतन मन और चेतन मन की बीच की दीवार टूट गयी है। बहुत सत्संग कर रहे हैं। और उस सत्संग को व्यवहार में उतार रहे हैं। चिरगांव झाँसी के राष्ट्रकवि मैथेलीशरण गुप्त जी ने लिखा था। कभी एम.ए. की कक्षा में ऐच्छिक हिन्दी में चला करती थी। सांकेत की कुछ पंक्तियां आप भी डायरी में लिख लेवें।

उठी ना लक्ष्मण की आँखे,
झकड़ी रही पलक पांखें।
किन्तु कल्पना घटी नहीं,
उद्धित उर्मिला हटी नहीं।।

और उद्धित उर्मिला जी ने बार–बार यही तो कहा था प्रभु मेरे लिए क्या –क्या है मेरी बाई जीजीबाई सीता माताजी को आज्ञा प्राप्त हो गयी। मेरे लिए क्या आज्ञा है और लक्ष्मण जी ने कहा रहो–रहो मेरे प्रिय रहे।

यह भी मेरे लिए सहो और अधिक क्या कहूं कहो।

वह भी सबकुछ जान गयी,
विवश भाव से मान गयी
श्री सीता के कन्धे पर
आंसू झर पड़े झर–झर।

लाला, कथा है व्यथा को मिटाने कीं। हमारी व्याकुलता मिट जावे अभी यही कहा था।

व्याकुलता मिटाये नमः,
शांति बढ़ाये नमः।
सुख आवाही नमः
सब सुख शांति चाहे नमः।।

कौन नहीं चाहे बताओ सब चाहे। कोई आशीर्वाद भी देवे तो क्या देवे। सुख शांति हो, अखण्ड सौभाग्यवती हो, राजी रहो, जीवता रहो। गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने रामचरित मानस की सुन्दरकाण्ड में लिखा। पूछ बुजायी खोई श्रम। और चरण कमलों में किनके सामने खड़े हुए जनक कुमारी सीता जी के सामने जो हनुमान जी ने उलटी–पलटी लंका सबझारी। रावण के महल तक को जला दिया। वो हनुमान जी विन्रम भाव से श्री सीतामाता के चरणों में प्रणाम करके कहते हैं।

संस्थान से मिले अंग, पाया रोजगार

मैं किशन लाल भील, उम्र 36, अचलाना, उदयपुर का रहने वाला हूँ। आठवीं कक्षा उत्तीर्ण हूँ। मैंने सन् 1995 से बस कण्डक्टरी का कार्य करना चालू किया था। बस का रूट भीण्डर से बडी सादडी था। 22 मार्च 2000 को बस का एक्सीडेंट हो गया। उस हादसे में कानोड़ निवासी एक व्यक्ति की मौत हो गई एवं 22 लोग घायल हो गये। उस हादसे में मेरे दोनों पैर कट गये। वहां के स्थानीय लोगों ने मुझे महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर में भर्ती करवाया। मेरे 4 ऑपरेशन हुए परन्तु सभी असफल रहे। फिर जिन्दगी बैसाखियों के सहारे चलने लगी। मेरे पैरों की स्थिति के कारण, हादसे के चार साल बाद नारायण सेवा संस्थान ने ऑटिफिशयल पैर लगाये गये, मैं बिना बैसाखियों के चलने लगा। परन्तु रोजगार के लायक नहीं था। जिसमें मैं अपने परिवारों का गुजारा कर सकूं मैंने संस्थान में आकर अपनी आपबीती सुनाई। संस्थान ने मेरे दुःख सुनकर मुझे रोजगार से जोड़ने के लिए चाय– नाश्ते का ठेला एवं आश्वयक सामग्री प्रदान की ताकि मैं अपने परिवार को भरण–पोषण कर सकूं। मैं संस्थान का बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

सम्पादकीय

सृष्टि के प्रारंभ से लेकर अब तक मानव जीवन पर अनेक प्रकार के संकट आते रहे हैं। समय–समय पर मनुष्य की सूझबूझ के कारण उन कष्टों का निवारण भी होता रहा है। कहते हैं कि कोई भी समस्या ऐसी नहीं है कि जिसका समाधान न हो। प्रयास किया जाए तो समस्या का निराकरण देरसवेर होता ही है। वर्तमान समय में मनुष्य एक भीषण महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी को समझने में, इसके निदान में, इससे बचने के उपायों में समय लगना स्वाभाविक था। आज हमारे पास इससे बचने एवं लड़ने के लिए अनेक प्रकार के साधन विकसित हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में हमारा भय दूर हो एवं शांत चित्त होकर इसका मुकाबला करके इसे हरा सकें, तभी सफलता का एक और अध्याय मानव इतिहास में लिखा जाएगा।

क्योंकि यह बीमारी शरीर से जुड़ी हुई है इसलिए शरीर विज्ञानियों का मत एवं अनुभव इसमें महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार शारीरिक दूरी, मास्क का प्रयोग, निर्जर्मीकरण करते रहना बचाव के उपाय हैं। प्रसन्नता की बात है कि अब तो इसके विरुद्ध दवा का भी आविष्कार हो चुका है। इसलिए इस महामारी का अंत निकट ही है। किंतु इन साधनों के साथ–साथ मन की . ढ़ता एवं सकारात्मकता बहुत आवश्यक है। सौभाग्य की बात है कि यह सब बातें हमारे बस में हैं। केवल अपने को अपनी मानसिकता बनानी है।

कुछ काव्यमय

दीखने लगा है जल्द ही,
मानव त्रासद का अंत ।
दुःख की बदली छंटते ही,
खुशियां फैलेगी दिग्दिगंत।
बस थोड़ा संयम और ,
कर ले रे मानव धारण।
सब मिल करें उपाय,
दूर हो रोग – प्रसारण।।

अपनों से अपनी बात

सेवा ही बड़ा धर्म

विनम्र व्यवहार और मन की कोमलता किसी भी हथियार से अधिक शक्तिशाली है। कोमल हृदय व्यक्ति का अस्तित्व उसकी मृत्यु के बाद भी रहता है।

जिदंगी का मूल मंत्र है, प्यार दो और प्यार लो। भगवान को वाणी में कठोरता पसन्द नहीं, इसीलिए उन्होंने जुबान को लचीली बनाया। लेकिन ये जो घाव करती है, वैसा लोहा भी नहीं कर सकता। ये अपने कटु शब्दों से एक पल में अपनों को पराया कर देती है। तो किसी को स्नेह और आत्मीयता की माला में गूंथ भी देती है। इस जुबान से महाभारत जैसे, बड़े–बड़े युद्ध हुए तो कई बिछड़े परिवार भी एक हो गए। एक दिन मुख में 32 दाँतों के बीच रहने वाली जीभ बोली–भाइयों! तुम 32 हो। मैं

तुम्हारे बीच रहती हूँ। बहुत लचीली और मुलायम हूँ। मेरा ध्यान रखना। सभी दांत एक साथ बोले– बहना! हम 32 हैं और तू अकेली है। फिर भी हम पर भारी है। तू हमारा ध्यान रखना। जीभ ने पूछा– मैं तुम्हारा ध्यान कैसे रख सकती हूँ? दाँत बोले– किसी को भी उल्टा–सीधा बोल कर, तुम तो अन्दर चली जाती हो, लेकिन भुगतना हमें पड़ता है। बहना! किसी को कुछ गलत मत बोलना, नहीं तो हमें घर–बार छोड़कर बाहर आना पड़ेगा। हमेशा सबसे मीठा बोलना। विनम्र व्यवहार और मन की कोमलता किसी भी हथियार से अधिक शक्तिशाली है, जहाँ कठोरता का जल्दी नाश होता है, वहीं कोमलता लम्बे समय तक रहती है। भीष्म पितामह शरशय्या पर थे। धर्मराज युधिष्ठिर ने आग्रह किया कि पितामह उन्हें जीवनोपयोगी शिक्षा दें। भीष्म ने कहा कि नदी जब समुद्र तक पहुँचती है तो बहाव के संग बहुत सी चीजों को बहाकर ले जाती है। एक दिन समुद्र ने नदी से प्रश्न किया–तुम बड़े–बड़े पेड़ों को अपने प्रवाह में ले आती हो, लेकिन क्या कारण है कि छोटी सी घास, कोमल बेलों व नरम पौधों को बहाकर नहीं ला पाती। नदी का उत्तर था–मेरे बहाव के दौरान बेलें झुक जाती हैं और रास्ता दे देती हैं, लेकिन वृक्ष अपनी कठोरता के कारण यह नहीं कर पाते।

–कैलाश 'मानव'

करुणा से भरपूर रहें

जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, धर्म उन्हीं के पास ठहरता हैं। व्यक्ति का मन दूसरों के प्रति सदा करुणा से भरा रहना चाहिए।

तीर्थंकर भगवान महावीर सत्संग के लिए आने वालों से कहते थे– गृहस्थ मनुष्य को गलत तरीके से धन अर्जित नहीं करना चाहिए। परिवार के मोह में आदमी बुरे से बुरा पाप करने में भी नहीं हिचकिचाता, पर जब उसका परिणाम भोगने का समय आता है तब वह अकेला ही दुःख भोगता है। अतः मोह, ममता और लोभ को त्यागकर

किसी भी क्षण कोई कोई गलत काम न हो, इसका प्रयास करना चाहिए।

साधकों को सदाचार का पूर्ण पालन करना चाहिए। जो निष्कपट और सरल होते हैं, उन्हीं की आत्मा शुद्ध रहती है और जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, उसी के पास धर्म ठहरता है। एक व्यक्ति ने तीर्थंकर से पूछा, ''दुःख क्यों सताते हैं?'' भगवान ने उत्तर दिया, ''प्राणी– अपने दुष्ट कर्मों के कारण ही दुःखी होता है। जो सब प्रकार का त्याग करता है।

वही सच्चा संन्यासी है।आदिशंकराचार्य भी यही कहते थे कि जो सत्य को आत्मसात् करता है, वही संन्यासी है। भगवान महावीर स्वामी ने कहा– जियो और जीने दो। एक बार महावीर स्वामी कहीं से गुजर रहे थे। आगे भयानक जंगल था, जिसमें एक विषैला नाग था। लोगों ने उन्हें रोका और कहा कि उस रास्ते से मत जाइए, क्योंकि इस रास्ते में विषैला सर्प है, जो लोगों को डस लेता है। लेकिन करुण हृदय महावीर नहीं माने और उसी राह आगे बढ़ गए। जब स्वामीजी जंगल में पहुंचे, तो नाग ने उन्हें डस लिया। दंशस्थल में जहां रक्त निकलना चाहिए वहां से दूध की धारा बह निकली।

माँ के शरीर में मांस होता है, रक्त होता है, लेकिन अपने बच्चों के लिए, स्तनों से सिर्फ दूध ही निकलता है। भगवान महावीर स्वामी में प्राणी मात्र के लिए इतना प्रेम था, जो एक माँ का अपने बच्चों के प्रति होता है। इसीलिए जब नाग ने उनको काटा तो उनके पैर से खून की जगह दूध निकलने लगा।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

सेवा कार्य की जानकारी ज्यूं–ज्यूं लोगों को मिलती जा रही थी, त्यूं–त्यूं अधिकाधिक लोग इससे जुड़ते जा रहे थे। सोजत रोड़ से पी.जी. जैन का पोस्टकार्ड आया, उन्होंने लिखा कि वे जीवन भर 100 रु. प्रति माह भेजते रहेंगे। उन्हें किसी जैन पत्रिका के माध्यम से नारायण सेवा के कार्यों के बारे में पता चला था। पोस्टकार्ड आया उसके अगले ही दिन इनका 1200 रु. का मनीऑर्डर भी आ गया जिसमें लिखा था कि अपने कहे अनुसार वे 12 माह की राशि एक साथ भेज रहे हैं। कैलाश बहुत खुश हो गया। किसी से आप सहायता मांगो और वो फिर सहायता दे, यह और बात है मगर कोई स्वेच्छा से, बिना मांगे, सहायता करे उसका तो कोई मुकाबला ही नहीं।

कैलाश के कार्यालय में ही एक शर्मा काम करते थे। एक दिन उन्होंने 60 रु. लाकर कैलाश के सामने रखे और कहा कि इसे सेवा कार्य हेतु जमा कर लो। कैलाश पूछ बैठा कि –ऐसा विचार आपके मन में कैसे आया। वो बोले–उन्होंने किसी काम के लिये हनुमान जी को सवा किलो प्रसाद चढ़ाने की मनौती की थी। काम सिद्ध हो गया तो प्रसाद की राशि इस पवित्र सेवा कार्य हेतु दे रहे हैं, यह हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाने के तुल्य ही है। भीलवाड़ा के शिवनारायण अग्रवाल ने भी जब नारायण सेवा के बारे में सुना तो 600 रु. का चेक भेज दिया। उन्हीं दिनों कैलाश स्थलाधीश महन्त मुरली मनोहरशरण से मिलने गया। महन्त कैलाश के कार्यों से बहुत प्रभावित थे। कैलाश ने उन्हें पई शिविर के बारे में पूरी जानकारी दी। महन्त ने उसे सुझाया कि अगली बार जब भी शिविर आयोजित करो, जिले के कलेक्टर को अवश्य अपने साथ ले जाना। कैलाश यह बात सुन कर हैरान रह गया, उसने गुरुदेव को कहा कि भला कलेक्टर जैसी बड़ी हस्ती हमारे शिविर में क्यूं कर आयेगी तब महन्त ने उसे समझाया कि कलेक्टर बहुत भले व्यक्ति हैं, उनसे समय लो, वे जरूर तुम्हें बुलायेंगे। अखबारों में शिविर का अच्छा प्रचार हो गया है। सब लोगों को इसकी जानकारी है। उन्हें शिविर, के चित्र तथा अन्य बातें बताना और निवेदन करना कि अगली बार वे स्वयं उपस्थित रहेंगे तो सेवा कार्य को बहुत प्रोत्साहन मिलेगा।

कैलाश ने कलेक्टर को फोन किया, उन्होंने सहजता से समय दे दिया तो वह उनसे मिलने चला गया। महन्त मुरली मनोहर ने एकदम सही आंकलन किया था। कैलाश ने अपने कार्यों का विवरण दिया ता बहुत प्रभावित हुए और अगले शिविर में सहर्ष शामिल होने को तैयार हो गये। पिताजी की चिकित्सा जारी थी, डॉक्टरों ने भी कह दिया था कि उनके पास 6 माह से ज्यादा समय नहीं है। शिविर की तैयारियां जारी थी। सत्तू बनाने का भारी भरकम काम सिर पर था। इसके लिये रविवार का दिन निश्चित किया था, मगर शनिवार को ही तेज वर्षा आ गई। शिशु भारती के देव श्रीमाली, कैलाश के साथ थे, उन्होंने भरोसा दिलाया कि अगले दिन वर्षा नहीं आयेगी।

अंश - 110

नारायण सेवा ने परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया

उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र चारों का फलां निवासी मेधा (60) वृद्धावस्था में पत्नी के संग जीवन की गाड़ी खींच रहे थे। इकलौता बेटा अलग रहता था करीब 9 माह पूर्व बेटे की पत्नी अपने तीन मासूम बच्चों को छोड़कर अन्यत्र चली गई। अब वृद्धा दादा – दादी पर गृहस्थी की जिम्मेदारी आ पड़ी । लॉकडाउन में बेटे की मजदूरी छूट गई और मदिरापान की उसकी लत के चलते परिवार भूखमरी के मुहाने पर जा खड़ा हुआ, जहां ईश्वर के अलावा कोई दूसरा मददगार नजर नहीं आ रहा था।

ऐसे में एक दिन नारायण सेवा संस्थान की टीम गांव में गरीबों को राशन की मदद पहुंचाने के ध्येय से पहुंची तो स्थानीय लोगों में वृद्ध मेघा और तीन पोतों के उनसे मिलवाया। उनकी विकट स्थिति देखकर संस्थान में हर माह राशन सामग्री देने का फैसला लिया। नन्हें नन्हें बच्चों को वस्त्र एवं पोषाहार भी दिया गया।

मेघा ने कहा कि बुढापें में पड़ोसियों और नारायण सेवा संस्थान ने मदद करके परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया, मैं दिल से उनके लिए दुआ करता हूँ।

स्वस्थ रहकर गर्मी का मुकाबला करें

उत्तर भारत में गर्मी प्रारंभ होते ही तापमान तेजी से बढ़ना प्रारंभ हो जाता है। मन करता है कि बस ठंडे वातावरण में बैठे रहे ताकि बाहरी वातावरण का अधिक अहसास न हो पर यह सब संभव नहीं है। कामकाजी लोग कैसे घर में बैठे रह सकते है। ऐसे में कुछ बातों को पहले से ही दिमाग में रखे कि गर्मी में बाहर निकलते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना है। ताकि सेहत भी ठीक रहें और गर्मी भी न सताए। गर्मियों में धूप में बाहर जाने से और बाहर का खाना खाने से डायरिया, हीट स्ट्रोक और गैस्ट्रोएंट्राइटिस होने का खतरा बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ त्वचा रोग जैसे फगंल इंफेक्शन, खुजली, त्वचा पर दाने आदि का होना, आंखों में खुजली, लाली और इंफेक्शन होने का खतरा भी बढ़ जाता है। गर्मियों में स्वयं को बचाने हेतु, छाता, चश्मा व स्कार्फ का प्रयोग करें। दिन भर में कम से कम दो से तीन लीटर पानी पिएं और ताजे फल सब्जियों का सेवन करें जैसे तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी आदि।

खूब सारे तरल पिएं –:

- दिर भर में खूब पानी पिएं ताकि शरीर के विषैले तत्व यूरिन के साथ बाहर निकल सके।
- नारियल पानी के नियमित सेवन से शरीर से पानी की कमी पूरी होती है और कई मिनरल्स भी शरीर को प्राप्त होते हैं जो हमें स्वस्थ रखने में सहायक होते है।
- शरीर को ठंडा रखने के लिए तरबूज, खरबूजा और खीरे का सेवन नियमित करें।
- जब कभी शरीर में ऊर्जा की कमी महसूस हो तो टैंग, ग्लूकोन डी, नींबू शिकंजी या रूह अफजा का सेवन करें। तुरंत एनर्जी प्राप्त होगी।
- घर से बाहर निकलते समय साफ पानी की बोतल जरूर लेकर निकलें ताकि बाजार का गंदा पानी प्यास लगने पर न पीना पड़े।
- घर पर जो आर एस घोल बना कर भी ले सकते है। एक गिलास पानी आधे नींबू का रस में एक चम्मच चीनी और एक पिंच नमक मिलाकर थोड़ा–थोड़ा कर पिएं।

संक्रमण से दूरी बनाकर रखें– साफ पानी पीएं और स्वच्छ ताजे भोजन को ग्रहण करें, अपने शरीर को फंगल इंफेक्शन से बचाने हेतु पसीने की दुर्गन्ध से दूर रहें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

कैलाश भरोसा रख भगवान पर। भरोसा रख, अपने उन हजारों दानदाताओं की कृपा पर, कोई 500 रुपये भेजता था। कोई 1000 रुपये भेजता था। कहीं 5000 रुपये का दान भी प्राप्त होता था। कहीं उससे ज्यादा भी प्राप्त हो जाता था। मनी ऑर्डर भी आते थे। बहुत प्रेम बनाये रखा, बनाए रखना ही चाहिए। वह घड़ी आ गई, जब उद्घाटन का दिन निश्चित हो गया । लंबा सा बड़ा निमंत्रण पत्र बनाया गया। जैसे जैन समाज में आमतौर पर प्रतिष्ठाओं में बनाए जाते हैं। पूज्य बाबूजी चैनराज जी लोढ़ा साहब का फोटोग्राफ उनके पाँचों बच्चों के फोटोग्राफ, पूज्य चैनराज जी लोढ़ा साहब अमुक तारीख को हॉस्पिटल का उद्घाटन करेंगे। पूज्य कनक राज जी लोढ़ा साहब ने अपने सबसे बड़े बेटे जी को भेजने की कृपा की। रणकपुर जोधपुर से पधारे जोधपुर में हवाई अड्डे उतरे। जोधपुर से राणकपुर पधारे। राणकपुर से फिर उदयपुर पधारने की कृपा की। बड़ा शुभ दिन पूज्य विमल मुनि जी महाराज, मंदिर मार्गीय धारा के पूज्य महाराज, श्री पूज्य चैनराज जी लोढ़ा साहब उनको बहुत सम्मान देते थे, और मैं भी बहुत सम्मान देता था। मंच पर आदरणीय मूंधड़ा साहब बिना शर्त के बिराजने वाले, वह भी बिराजे, कमला जी, प्रशांत, कल्पना दौड़ दौड़ कर सेवा कर रहे थे। और प्रभु कृपा से ही उद्घाटन, शुभ उद्घाटन पूर्ण हुआ। बहुत आनंद हुआ। नारायण सेवा संस्थान के पहले हॉस्पिटल का शुभारंभ हुआ।

वह पथ क्या पथिक पथिकता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल ना हो।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धाराएं प्रतिकूल ना हो।

अनुकूलता प्रतिकूलता तो आती ही रहेगी, आई है बहुत ही आई है। पन्ने के पन्ने रंग जावे, परंतु आनन्द भी बहुत हुआ। एक अद्भुत दृश्य, परम पूज्य बाबू जी साहब गार्डन में मिले, तो संपर्क बना रहा। प्रेम बना रहा, और ढाई साल बाद एक दिन अचानक सुना पूज्य बाबूजी शांत। उनके देह देवालय को छोड़ कर चले गये। हंस अकेला चला।

तुरंत मुंबई पहुँचा, बहुत दुख हुआ। नारायण सेवा के स्तम्भ ने चिर विश्राम ले लिया। जब अंत्येष्टि में भाग ले रहे थे, कुछ महानुभाव कह रहे थे। चैनराज जी लोढ़ा की सेवा ने उनको ढ़ाई साल का जीवन बढ़ा दिया। दार्ढ़ साल पहले कैलाश जी है उनके साथ मिलकर के हॉस्पिटल बनाया उदयपुर में। मै पीछे खड़ा सुन रहा था। मैंने हाथ जोड़कर के कहा मैं ये वो छोटा सा निशान हूँ। अच्छा– अच्छा कैलाश जी चैनरज जी चल बसे।

हाँ, हाँ, कितना बयां करू मैं,
इस दुनिया की अजब गति।
चंदन आना और जाना है,
फर्क नहीं है राई रति।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 463 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023